

सावन के लोकगीतों में प्रकृति, प्रेम और परिवार

हरियाणवी लोकगीतों में सावन मास का वर्णन कोई सामान्य ऋतु-वर्णन नहीं है। यह हरियाणवी जनमानस का प्रकृति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन और एक संपूर्ण दार्शनिक विवेचन है।



लोक साहित्य

आंचल शर्मा

लोक साहित्य किसी भी प्रदेश की माटी की वह जीवंत धड़कन होता है, जिसमें जनमानस के सुख-दुःख, आशा-निराशा और प्रकृति के साथ उनके अटूट रगात्मक संबंध गुँजते हैं। हरियाणवी लोकगीतों की समृद्ध परंपरा में सावन मास का विशेष दार्शनिक और सांस्कृतिक महत्व है। ग्रीष्म ऋतु की झुलसा देने वाली गर्मी के बाद जब आसमान में काले-कजारे बादल फिर आते हैं और धरती की प्यास बुझती है तो केवल प्रकृति ही नहीं, बल्कि संपूर्ण लोक-जीवन उत्कलित से भर उठता है।

सावन के लोकगीतों में प्रकृति का यह अभिनंदन केवल बाह्य सौंदर्य का वर्णन नहीं है, अपितु यह मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक ताने-बाने और लोक-दर्शन का एक गहरा काव्यात्मक विवेचन है। सावन के हरियाणवी लोकगीतों के व्यापक संदर्भों में प्रकृति, मनुष्य और समाज के इस अद्वैत संबंध को विस्तार से समझा जा सकता है। सावन का महिना आते ही हरियाणवी जनजीवन में एक नई



को मिलती है। बागों में झूलने के लिए हर आयु और हर रूप-रंग की सखियाँ एक साथ एकत्रित होती हैं। प्रकृति किसी में भेद नहीं करती, उसकी वर्षा गोरे और साँवले, पंद्रह और बीस वर्ष की आयु वालों पर समान रूप से होती है। इसी दार्शनिक भाव को अपनाते हुए हरियाणवी समाज की विभिन्न जातियाँ भी इन झूलों पर एक साथ अपना उल्लास साझा करती हैं। झूलों और बागों का वर्णन एक उत्सव की तरह किया जाता है, जहाँ सामाजिक समता स्पष्ट रूप से मुखरित होती है -

*सायण आया है माँ में से सुन्या जी
हां जी कोए आई है नवेली तीज
पड़ै ए पंजाली हरियाल बाग में जी*

यह उल्लास सभी वर्गों को एक सूत्र में जोड़ता है -

*एक दस झूले राधेय बाणिया जी
हां जी एक दस राघव और राजपूत
बिच बिच झूले कंवर निहालदे जी*

हरियाणवी लोक संस्कृति में सावन का सबसे बड़ा पर्व तीज है। प्रकृति जब अपने पूरे यौवन पर होती है तब तीज का आगमन होता है -

*तीजां का त्योहार हितु सै सायण की
खड़ी झूल पै मटके छोह री बास्यण की*

तीज और सावन के लोकगीतों में मायके का विशेष स्थान है। पिता, भाई और भतीजे के घर में झूला डालने का जो क्रम लोकगीतों में

दर्शाया गया है, वह पीढ़ियों के विस्तार और मायके से जुड़े स्नेह को दर्शाता है। वर्षा की इन बूंदों का अत्यंत सूक्ष्म और लयबद्ध चित्रण भी मिलता है -
नांनी नांनी बूंदियां हे सावन का मेरा झूलणा
एक झूला बूला मैंने बाबल के राज में
संग को सहेली है सावन का मेरा झूलणा
 यह बाबल का राज एक प्रकार का राजशाही सुख है जहां बेटियों को असीम स्वतंत्रता प्राप्त होती है। यहाँ सावन की बूँद उनके मन की प्रसन्नता के अहलाहल को और भी अधिक बढ़ाती हैं -
नांनी नांनी बूंदियां मीयां बरसता हे जी
हां जी काहे चारों दिसा पड़ेगी फुवार
हां जी काहे सामान आया सुघड़ सुहावणा
 संग की सहेली मां मेरी झूलती जी
 सावन के लोकगीतों में बड़ी घटनाओं के साथ सावन के सूक्ष्म प्राकृतिक परिवर्तनों को भी शब्दों में पिरोया गया है। जब वर्षा शुरू होती है और सखियां भागने लगती हैं तो नायिका की विवशता एक बहुत ही सुंदर बिंब का निर्माण करती है -
सखी सहेली मां मेरी भाजगी जी

हा जी काहे हम तै तो भाज्या ना जाय
पग की है पायल उलसी दूब में जी
नायिका के सौंदर्य का वर्णन करते हुए लोककवि
प्रकृति के सबसे सशक्त प्रतीकों का उपयोग करता
है। एक नायिका की मोटी वाणी की तुलना प्रकृति
के सबसे सुरीले पक्षी से की जाती है -
मोटी मोटी तेरी सै जणो कोयल जामन में
तेरे दामण में लिसकार उठै चमक रिहा घोटा
लर्ज लर्ज के जावै से योह जामन की डाली
शारीरिक सौंदर्य को व्यक्त करने के लिए भी
प्राकृतिक उपमाएँ बहुत ही सहजता से दी गई हैं -
तेरे दुंगे पं लटके काला नाग सा मोटा
मोटी मोटी अँखियाँ के मांहां डोरा ख्याही का
चंदरमा सा मुखड़ा तेरा जणों नूर का लोटा
तीज के अवसर पर समुगल से मायके जाने के लिए
किसी का लिवाने आना एक आवश्यक रस्म रही है।
पारिवारिक पदनुक्रम और नायिका की इच्छा का
यह द्वंद हीन पंक्तियों में स्पष्ट दिखाई देता है -
बूढ़ा आया है मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये ना
जो बुढ़े के साथ
जेटा आया है मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये ना
जां जेटे के साथ

देवर आया है मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये नां
जो पाली के साथ
क-था आया है मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये इब
जो क-थे के साथ
यहां ससुर या जेट के साथ जाने में नायिका संको
करती है, परंतु पति के आने पर उसकी प्रसन्नता
प्रामाणिक संरचना का एक प्रामाणिक दस्तावेज
है। उत्सवों के बीच भी जीवन का कठोर यथार्थ
कभी भी लुप्त नहीं होता। सावन का उल्लास जहां प्रेम
और मिलन के गीत गाता है, वहीं घर की दहलीज
के भीतर चल रही सास-बहू की खींचतान भी इन
लोकगीतों का अभिन्न अंग है। बहू की यह बगावत
प्रयोग-जीवन की उस स्त्री-चेतना का साक्षात्
प्रमाण है जो अपने हकों और सम्मान के लिए
आवाज उठाना जानती थी। प्रकृति का यह
अभिन्नंदन केवल युवतियों के झूला तक सीमित
नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध उस कृषक
समाज से भी है जिसके जीवन का आधार ही वर्षा
है। जब गमन में बिजलियां चमकती हैं, तो यह
धरती के उर्वर होने और नई फसल का संकेत है -
रे गगन गरजे हिमाली बिजली
पड़े बुद्धिया भरे क्यारी
समै बिरखा लगे प्यारी

और जब यह वर्षा विकराल रूप लेती है तो
 किसानों जीवन से जुड़े युवा अपने बचाव के लिए
 उपलब्ध सभी साधनों का उपयोग करते हैं -
 मोटी मोटी बुन्दा झुले पे आँसू
 तो गाबरू नै चढ़ा ताणी, हो मन्ने तेरी सोंह
 जद वोह चाहर भीजन लागी
 तो गाबरू नै छतरी ताणी, हो मन्ने तेरी सोंह
 सासवन का सबसे कारुणिक और दार्शनिक पहलू
 है जहाँ वह फिर की अर्पित को और भड़का
 देता है। जब खेत-ब्यारियां पानी से भर जाते हैं,
 तब परदेस गए पति की याद नायिका के हृदय को
 चीर देती है। वह एक राहगीर से मिन्नतें करती है
 कि वह उसे अपने साथ ले जाए -
 सातुन के डोला घर रहे र बिटाऊ डोला हमरे गये परदेस
 संग चलते हो ले चलुन मेरो डाबर नैनी चलो न हमरो साथ
 इस विप्रलब्ध शृंगार और यौवन की तड़प का
 मार्मिक वर्णन और भी मिलाता है -
 सामण का महीना मेघा रिमझिम रिमझिम बरसै

सावन के ये अनमोल लोकगीत और इनका ग्रामाणिक संकलन, जैसा कि हरियाणा के लोकरंग जैसी रचनाओं में सहेजा गया है, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के वे मोती हैं, जिनमें प्रकृति के शाश्वत अभिनंदन की गुंज आने वाली सदियों तक सुरक्षित रहेगी।

नैन नै समझाऊं तो बी बैरी जेबन तरसै
जीजा के दिनां की तो थी आस बड़ी भारी
ऐसे मैं भी न आए मैं पड़ी दुखां की मारी
अंततः, उसकी यह वेदना इतनी सघन हो जाती है
के वह अपने परदेसी पति को एक सख्त संदेश
भेजवाना चाहती है। वह अपनी सूझ से कलम-
गुनाहत मंगवाकर अपने पति को नौकरी छोड़कर
गैरौत आने का परवाना लिखती है -

हे निकली बिचली गाल जेठानी मार दिया ताना
हे जिनका पति बसैं परदेस ऐसे जीने से मर जाना
हे बांदी ल्याबो कलम दवात पति पै गेरुं परवाना
चाहे लुगियो डेढ हज्जार तने अपना नाम कटवाना

हरियाणवी लोकगीतों में सावन मास का वर्णन कोई सामान्य ऋतु-वर्णन नहीं है। यह हरियाणवी जनमानस का प्रकृतिक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन और एक संपूर्ण दार्शनिक विवेचन है। रंथेयो प्रभावपूर्ण और संस्कृत शिक्षण के माध्यम से लोक-ध्वनियों, छन्दों और भाषा की जो गहरी समग्र विकसित होती है, उसी कसौटी पर पखरने से इन गीतों का प्रासास्तिक काव्यात्मक और लयबद्ध सौंदर्य उभर कर सामने आता है। ये सभी प्रसंग मिलकर एक ऐसा विशाल प्राकृतिक कैनवास तैयार करते हैं, जैसे पर लोक-संस्कृति अपने सुख, दुख, विहार, भोजन, सामाजिक समरसता और पारिवारिक गार्थाथ के गहरे रंग उकेरती है। इन गीतों की दार्शनिक गहराई इसी बात में निहित है कि ये प्रकृति को मुख्य में अलग कोई जड़ वस्तु नहीं मानते। सावन के ये लोकगीत और इनका प्रामाणिक संकलन, जैसा कि हरियाणा के लोकरंग जैसी रचनाओं में सहेजा गया है, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के वे मोती हैं, जिनमें प्रकृति के शाश्वत अभिनेत्रों की गूँज आज भी बाली सदियों तक सुरक्षित रहेगी।

गीत डॉ. त्रिलोक चंद फतेहपुरी

फर्ज निभाओ

जननी अर जन्मभूमि का ख्याल आपनै करण्य सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरण्य सै ॥

पहला फर्ज मां-बाप ऋण जिस तै छुटकारा पाओ
 गृहस्थ आश्रम म्हें जाकै खुद घर को स्वर्ग बणाओ
 आधि-व्याधि इडा पीडा इणतैं कती ना डरण्य सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरण्य सै ॥

दूजा फर्ज गुरु का ऋण जिसने गुणवान बणाया
 भूत भविष्य अर वर्तमान का दार्षण तुमहें दिखाय्य
 निज संतान पढ़ा करके गुरु ऋण तै कती उबरण्य सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरण्य सै ॥

फर्ज तीसरा देवों का ऋण जिसने जरूच चुकाओ
 मंदिर मस्जिद तै पहल्या मां बाप को शेष हुकाओ
 सत्य अहिंसा मानवता के भाव भी दिल् मंह मरण्य सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरण्य सै ॥

आधुनिकता की चकावैध मंह उलझ नहैं तुम जान्य
 जी तोड़ सदा मेहनत करण्य मेहनत तै मंजिल पण्य
 मां-बाप गुरु के वचन नै याद सदा हीं रखण्य सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरण्य सै ॥

जननी और जन्मभूमि तै सदा हीं प्रीत लगण्य,
 संयम निष्ठा अनुशासन तै सारे फर्ज निमाण्य,
 त्रिलोक सीख ले कर्म कमाण्य जै भव तै पार उतरण्य सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरण्य सै ॥

haribhoomisahitya@gmail.com पर
आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

पारंपरिक व्यंजन तीज-रक्षाबंधन पर्व पर खास तौर से बनने वाली ‘देसी मैगी’ की निर्माण प्रक्रिया में ही अपनाकर समायोजित हुआ है

जनजीवन

रवि यादव

एक जमाना था जब हर घर में राखी वाले दिन और तीज वाले दिन देसी सेवइयां बनती थीं और सब चाव से खाते थे। गांव की वह मीठी सौगात, जो हर घर की यादों में बसती थी, तब आज के जैसा समय नहीं था। करीब तीस वर्ष पहले तक उत्तर भारत के अनेक गांवों में एक ऐसा पारंपरिक व्यंजन बनाया जाता था, जिसका नाम सुनते ही बचपन की अनगिनत यादें ताजा हो जाती हैं। सेई कहें या सेवइयां, आज की पीढ़ी शायद इससे परिचित न हो, लेकिन उस समय यह बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को पसंद हुआ करती थी। यदि आज के संदर्भ में इसकी तुलना करने लें तो इसे ‘देसी मैगी’ कहा जा सकता है।

फर्क बस इतना था कि मैगी नमकीन होती है, जबकि सेई मीठी बनती थी और उसमें घर का अपानापन, मेहनत और परिवार का स्नेह घुला होता था। हालांकि नमकीन सेवइयां भी बना ली जाती थीं। उस समय आजकल वाली मिठाइयों का चलन दूर-दूर तक नहीं था। घर की माताएं घर में लोगों की देसी मशीन से सेवइयां बनाती थीं। इस मशीन को खाट के ऊपर में कस दिया जाता था और गुंथी हुआ आटा लोई बनाकर इसमें डाल दिया जाता था। कोई एक इस मशीन के हैंडल को घुमाता और उसे-उसे हैंडल घुमाता, दूसरी ओर से आटे की पतली-पतली लंबी लड़ियां निकलतीं, जो बिल्कुल

आज की मैगी या सेवइयां जैसी दिखाई देती थीं। सेई का स्वाद केवल उसकी मिठास में नहीं था, बल्कि उसे बनाने की पूरी प्रक्रिया में था। घर की महिलाएं मशीन चलातीं, बच्चे बाहर निकलती सेइयों को संग्रहित करते, कोई उन्हें सुखाने के लिए फैलाता, तो कोई हंडी-अनाक करता। यह केवल खाना बनाना नहीं, बल्कि परिवार के साथ बिताया गया एक सुखद समय होता था। उस दौर में न मोबाइल थे, न टीवी

का इतना आकर्षण। परिवार के लोग साथ बैठकर काम करते थे और बातचीत में ही समय कब बीत जाता, पता ही नहीं चलता था। एक खाट पर कोई कपड़ा या लुग्डी बिछा दी जाती और उस पर कीकर या किसी अन्य पेड़ की सूखी टहनियां रख दी जाती थीं। मशीन से निकली सेवइयों को इसी टहनियों या छड़ी पर फैला दिया जाता था। धूप में दोपहर तक सेवइयां सूख जातीं और फिर इन्हें देसी चूल्हे पर देगवी या पत्तिले में चढ़ा दिया जाता था। कुछ ही देर में पूरे घर में ऐसी मीठी सुगंध फैल जाती कि बच्चे बार-बार रसोई में झांकने लगते—‘अम्मा, सेई तैयार हो गई क्या?’ थोड़ी देर में सेवइयां तैयार हो जाती थीं और फिर धीरे से साथ खाया जाता था। एक बात और याद कीजिए कि जब किसी घर में यह सेवइयां बनाने की मशीन नहीं होती थी तो घर की औरतें गृहे हुए आटे का छोटा छोटा हिस्सा लेकर हाथ से जवे बना लेती थीं।

हालांकि इनका आकार छोटा होता था, मगर इनका भी पकने पर अपना ही स्वाद होता था। आज जब दो मिनट में बनने वाली मैगी हर दुकान पर उपलब्ध है, तब सुविधा तो बढ़ गई है, लेकिन उस सामूहिक आनंद को कभी भी महसूस नहीं होती है। मशीन का हैंडल घुमाते हुए थक जाना, बच्चों का उत्साह से पास खड़े रहना, धूप में सुखती सेइयों की सुशब्द और शाम को दूध में बनी मीठी सेई का इंतजार, ये सब यादें आज भी मन को भावुक कर देती हैं। समय के साथ जीवनशैली बदल गई। पारंपरिक रसोई के अनेक उपकरण कबाड़ की हवाले हो गए और उनकी जगह आधुनिक मशीनों ने ले ली। सेई बनाने वाली वह छोटी-सी मशीन भी अब शायद ही किसी घर में दिखाई देती है। नई पीढ़ी ने उसका नाम भी मुश्किल से सुना होगा, लेकिन जिन्हें लोगों ने बचपन में इसका स्वाद चखा है, उनके लिए सेई केवल एक व्यंजन नहीं, बल्कि अपने गांव, अपने परिवार और अपने बचपन की असूया स्मृति है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम ऐसे पारंपरिक व्यंजनों और उनसे जुड़ी परंपराओं को केवल याद ही न करें, बल्कि अंगूली

यदि कभी किसी पुराने घर के कोने में वह मशीन मिल जाए, तो उसे कबाड़ समझकर फेंकने के बजाय एक बार फिर से साफ़ कीजिए, आटा गुंथिए, खाट के पाए में उसे कसिए और हैंडल घुमाइए। यकीन मानिए, मशीन से केवल सेई ही नहीं निकलेगी, बल्कि बचपन की वे अनमोल यादें भी फिर से जीवंत हो उठेंगी, जिनकी मिठास किसी भी आधुनिक व्यंजन से कहीं अधिक है।

पीढ़ी तक भी पहुंचाएं। यदि कभी किसी पुराने घर के कोने में वह मशीन मिल जाए, तो उसे कबाड़ समझकर फेंकने के बजाय एक बार फिर से साफ़ कीजिए, आटा गुंथिए, खाट के पाए में उसे कसिए और हैंडल घुमाइए। यकीन मानिए, मशीन से केवल सेई ही नहीं निकलेगी, बल्कि बचपन की वे अनमोल यादें भी फिर से जीवंत हो उठेंगी, जिनकी मिठास किसी भी आधुनिक व्यंजन से कहीं अधिक है। आजकल तीज या रक्षाबंधन के त्यौहार पर जो भी रहा है, उससे आप सभी वाकिफ हैं। इसके बारे में तो आप झुंझसे भी ज्यादा जानते हैं। ऐसा नहीं है कि हमारे खान-पान की वे परंपराएं हम भूल गए हैं। असल में हम देखा-देखी के शिकार हो गए और खुद को मॉडर्न कहने लगे हैं।

हरियाणवी नृत्य अपनी कला, ऊर्जा और सौंदर्य में अद्भुत : रोहित बच्ची



कलाकार

डॉ. तबस्सुम जहां

हरियाणवी लोकनृत्य और अभिनय की परंपरा को अपनी कला, संवेदना और समर्पण से नई पहचान देने वाले युवा कलाकार रोहित बच्ची आज हरियाणवी सिनेमा का एक शक्तिशाली नाम बन चुके हैं। हरियाणवी फिल्म 'दादा लख्मी' में रोहित ने डॉसर (नचार) की भूमिका निभाई। इसके अलावा '12वीं आला याार', 'बट्ठा', 'बूझा' और 'सांगी' जैसी फिल्मों में उन्हें मुख्य भूमिका निभाने का अवसर मिला। उन्होंने मोमाकू में एक छोटा-सा डॉस क्रियर भी किया। वहीं अहसास, नीम और सुमित्रा जैसी कई लघु फिल्मों में भी अभिनय किया।

रोहित बच्ची ने गीतों का निदेशन भी किया है तथा 'वनवास' और 'जर, जोरू, जमीन' जैसी फिल्मों में सहायक निदेशक के रूप में भी कार्य किया है। उनकी आने वाली फिल्मों में 'यारी में गद्दारी' शामिल है, जिसमें वे नकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं। 'देद' में वे मुख्य नायक की भूमिका में दिखाई देंगे तथा 'पाद चक्कर' में भी एक अलग ही किरदार में नजर आएंगे। सोनीपत जिले के गोहाना में जन्मे रोहित को बचपन से ही नृत्य का गहरा शौक था। बाहरवी तक की शिक्षा गांव के सरकारी विद्यालय से प्राप्त करने के



बाद उन्होंने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर तथा हाल ही में अभिनय विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उनकी बड़ी बहन ने शिक्षा और नृत्य, दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रतीति करने और आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रोहित के लिए नृत्य भी अभिनय का ही एक रूप है। इसमें वे बिना कुछ बोले अपने हाव-भाव, भावनाओं और अभिव्यक्तियों के माध्यम से बहुत कुछ कह देते हैं। उनके अनुसार उन्हें सबसे अधिक सात्विक अभिनय पसंद है। शुरुआत में उनके लिए अभिनय और नृत्य के बीच

संतुलन बनाना थोड़ा कठिन था। उसी संतुलन को बेहतर बनाने और अभिनय को गहराई से समझने के लिए उन्होंने अभिनय की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। दादा लखी फिल्म में काम करने के विषय में वे बताते हैं कि वह उनका सोभाय्य रहा कि उनके कॉलेज का एक डांस वीडियो वायरल होने की वजह से उन्हें इस फिल्म का हिस्सा बनने का अवसर मिला। उन्होंने पहले से कोई अभ्यास नहीं किया था। सेट पर ही कोरियोग्राफी तैयार हुई और वह उसे सीखा भी। इसका पूरा श्रेय वे लीला सैनी और यशपाल शर्मा से लेते हैं। उन्होंने उस पर विश्वास किया, प्रोत्साहित किया और आगे बढ़ने का हौसला दिया। दादा लखी फिल्म को वे हरियाणवी सिनेमा का युग-परिवर्तन मानते हैं। उनके अनुसार आज हरियाणा का लगभग हर अच्छा गायक फिल्म निर्माण की ओर आकर्षित हो रहा है और इसकी सबसे बड़ी वजह दादा लखी फिल्म है। उनका मानना है कि दादा लखी में उन्होंने नचार के किरदार को पूरी शिद्दत से जिया। शायद उसी अभिनय को देखकर सांगी के निर्माताओं ने उन्हें मुख्य किरदार 'अमन' की भूमिका के लिए चुना। जहां तब अभिनय की बात है, उनके अनुसार अभिनय उन्हें इतना प्रिय है कि वे हर किरदार में सहजता से ढल

नचार का किरदार उन्हेन केवल पर्दे पर नहीं निभाया, बल्कि उसे वास्तविक जीवन में भी महसूस किया और जिया है। इसलिए इस भूमिका के लिए उन्हें किसी विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं पड़ी। चुनौतियां स्वीकार करना हर कलाकार को अच्छा लगता है।

जाते हैं। रोहित ने दादा लख्मी और सांगी, दो
 में ही नचार का महत्वपूर्ण किरदार निभाया
 उनके अनुसार नचार का किरदार उन्हें
 कवल पर पर नहीं निभाया, बल्कि उ
 सांस्कृतिक जीवन में भी महसूस किया अ
 जेजा है। इसलिए इस भूमिका के लिए उ
 केसी विशेष तैयारी की आवश्यकता न
 डी। उनके अनुसार चुनौतियाँ स्वीकार कर
 पर कलाकार को अच्छा लगता है। स्
 उनके शब्दों में, 'मैंने उन किरदार के लिए ए
 हिंदला का वेश धारण किया, तो ऐसा ल
 जैसे मैंने एक साथ सौ जिंदगियाँ जी ली ह

इस दुनिया में एक स्त्री होना ही अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती है। आज की परिस्थितियाँ तथा हरियाणवी रंगमंच और सिनेमा की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए रोहित मानते हैं कि एक कलाकार के रूप में आज भी परिस्थितियाँ पूरी तरह संतोषजनक नहीं हैं। हालाँकि पहले की तुलना में स्थिति कुछ बेहतर हुई है, लेकिन अभी बहुत काम होना बाकी है। इसे और बेहतर बनाने की जिम्मेदारी हम सभी कलाकारों की है। उनका मानना है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म आने के बाद दर्शकों की देखने की आदतों में बड़ा बदलाव आया है। आज अधिकांश लोग घर बैठे ही मनोरंजन चाहते हैं, वह भी निःशुल्क। लेकिन उनके लिए सिनेमाघर में बैठकर फ़िल्म देखने का अनुभव बिल्कुल अलग और कहीं अधिक प्रभावशाली होता है। हमें अपनी लोक परंपराओं, भाषा और नृत्य पर गर्व करना चाहिए। दुर्भाग्य से हम देखी होने में संकोच महसूस करते हैं, इसलिए हरियाणवी लोकनृत्य को वह सम्मान नहीं मिल पाता, जिसका वह अधिकारी है। आज बच्चों की रुचि पश्चिमी संस्कृति की ओर अधिक है। फिर भी हरियाणवी नृत्य अपनी कला, ऊर्जा और सौंदर्य में अद्भुत है। बस आवश्यकता है कि हम अपनी जड़ों से सिर से जुड़ें।

पीजीडीसीए: कंप्यूटर क्षेत्र में रोजगार के साथ स्वरोजगार के भी खुलेंगे रास्ते

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

डिजिटल भारत के दौर में कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। ऐसे समय में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कंप्यूटर एप्लीकेशंस (पीजीडीसीए) विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा व्यावसायिक पाठ्यक्रम बनकर उभरा है, जो उन्हें आईटी क्षेत्र में मजबूत करियर बनाने के साथ-साथ रोजगार और स्वरोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध कराता है। यह एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम है, जिसे विशेष रूप से उन स्नातक विद्यार्थियों के लिए तैयार

स्नातक के बाद एक वर्षीय डिप्लोमा से रोजगार की बढ़ेंगी संभावनाएं

किया गया है, जो कंप्यूटर अनुप्रयोगों और आधुनिक तकनीकी कौशल में दक्षता प्राप्त करना चाहते हैं। पीजीडीसीए में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी का किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उत्तीर्ण होना आवश्यक है। सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए न्यूनतम 50 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति वर्ग के लिए 47.5 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए हैं। यह

व्यावहारिक प्रशिक्षण से डिजिटल युग की मांग के अनुरूप तैयार होंगे विद्यार्थी

पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को कंप्यूटर विज्ञान के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान करता है, जिससे वे उद्योगों की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार हो सकें। पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को कंप्यूटर फंडामेंटल्स, प्रोग्रामिंग लैंग्वेज, डेटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम (डीबीएमएस), वेब डिजाइनिंग एवं वेब

प्रोग्रामिंग, वेब डिजाइनिंग, डेटाबेस और नेटवर्किंग का मिलेगा व्यापक ज्ञान

टेक्नोलॉजी, ऑपरेटिंग सिस्टम, डेटा स्ट्रक्चर, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, नेटवर्किंग तथा प्रोजेक्ट वर्क एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों का अध्ययन कराया जाता है। इससे विद्यार्थियों में तकनीकी समस्याओं के समाधान की क्षमता विकसित होती है और उन्हें वास्तविक कार्य वातावरण का अनुभव भी प्राप्त होता है।

डिजिटल युग में सफल करियर की मजबूत नींव

विशेषज्ञों का मानना है कि पीजीडीसीए केवल एक डिप्लोमा नहीं, बल्कि डिजिटल युग में सफल करियर की मजबूत नींव है। इस पाठ्यक्रम के बाद विद्यार्थी एमसीए, एमएससी (कंप्यूटर साइंस) तथा अन्य उच्च स्तरीय कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपने ज्ञान और करियर को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकते हैं। वर्तमान समय में बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था को देखते हुए पीजीडीसीए युवाओं के लिए एक उपयोगी और भविष्य उन्मुख विकल्प साबित हो रहा है।

निजी क्षेत्र में लगातार बढ़ रही उपयोगिता

पीजीडीसीए के बाद विद्यार्थियों के लिए सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध होते हैं। शिक्षण संस्थानों में कंप्यूटर प्रशिक्षक, कंप्यूटर अनुदेशक तथा आईटी प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने का अवसर मिलता है। कई विद्यालयों, महाविद्यालयों और प्रशिक्षण संस्थानों में एक वर्षीय मान्यता प्राप्त कंप्यूटर डिप्लोमा को आवश्यक योग्यता के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिससे पीजीडीसीए धारकों की मांग बनी रहती है। सरकारी विभागों, बोर्डों, निगमों और सार्वजनिक उपक्रमों में भी समय-समय पर ऐसी भर्तियां निकलती हैं, जिनमें एक वर्षीय कंप्यूटर डिप्लोमा अनिवार्य या वांछनीय योग्यता होती है। ऐसे पदों पर पीजीडीसीए उत्तीर्ण अभ्यर्थी आवेदन करने के पात्र होते हैं। वहीं निजी क्षेत्र में भी इस पाठ्यक्रम की उपयोगिता लगातार बढ़ रही है। सॉफ्टवेयर कंपनियों, आईटी फर्मों, बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थानों, ई-गवर्नेंस परियोजनाओं, वेब डेवलपमेंट, डेटा प्रबंधन, तकनीकी सहायता, नेटवर्क प्रशासन और कार्यालय स्वचालन जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षित युवाओं की मांग बनी रहती है। इसके अलावा विद्यार्थी अपना कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र, साइबर कैफे, सीएससी या ई-मित्र केंद्र, वेब डिजाइनिंग एवं ऑनलाइन सेवा केंद्र शुरू कर स्वरोजगार के माध्यम से भी बेहतर आय अर्जित कर सकते हैं।



कांग्रेस की बैठक में संगठन को मजबूत बनाने पर जोर

नारनौल। जिला कांग्रेस कमेटी के अग्रणी संगठनों के प्रभारी एवं उपाध्यक्ष एडवोकेट कुलदीप सिंह भगड़ के मार्गदर्शन में जिला अनुसूचित जाति विभाग कांग्रेस जिला अध्यक्ष तोताराम कौहली व नवगठित जिला कार्यकारिणी की ओर से बैठक आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता जिला अध्यक्ष तोताराम कौहली ने की। बैठक के मुख्य वक्ता एवं प्रभारी के रूप में एडवोकेट कुलदीप सिंह भगड़ उपस्थित रहें। उन्होंने संगठन को बूध एवं ग्राम स्तर तक सशक्त बनाने, कांग्रेस की नीतियों को प्रत्येक परिवार तक पहुंचाने तथा अनुसूचित जाति समाज को संगठन से और अधिक मजबूती से जोड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर हरियाणा प्रदेश अनुसूचित जाति विभाग के उपाध्यक्ष अनिल फंडन ने संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान किया। बैठक का संचालन रामसिंह जोया ने किया। इस मौके पर अमित राज, राजेश, शेरसिंह, गुलाब सिंह, मांगेम, सुभाष, विजय महायच, अमर सिंह, नरेश कुमार, रामकिशन वाल्मीकि, रमेश कुमार, प्रभुदयाल, राजकुमार, रणसिंह छिलरो, ज्ञानीराम दनचौली आदि मौजूद थे।

मांगों को लेकर 29-30 सितंबर को डीसी कार्यालय के समक्ष धरने का ऐलान

21 को 80 वर्ष से अधिक आयु के पेंशनरों को सम्मानित करेगा संघ

सदस्यों से धरने में अधिक संख्या में शामिल होने व संघर्ष फंड में सहयोग देने की अपील

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

रिटायर्ड कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित अखिल भारतीय राज्य सरकारी पेंशनर्स फेडरेशन की बैठक रविवार को यादव धर्मशाला में जिला प्रधान घनश्याम शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसका संचालन जिला सचिव रोशनलाल निंबल ने किया। बैठक में राज्य प्रधान जगनलाल निनानिया व राज्य सचिव धर्मपाल शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक की शुरुआत नौ जुलाई को दिवंगत हुए पूर्व राज्य प्रधान जैमल सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई। उपस्थित सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर



नारनौल। यादव धर्मशाला में बैठक करते रिटायर्ड कर्मचारी।

उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। बैठक में सर्वसम्मति से 21 अगस्त को वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर संघ के 80 वर्ष या उससे अधिक आयु के सदस्यों को जिला स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। इसके लिए सभी ब्लॉक प्रधानों और सचिवों को निर्देश दिए गए कि वे अपने-अपने क्षेत्र के पात्र सदस्यों की आयु प्रमाणित सूची 21 अगस्त से पहले जिला इकाई को

उपलब्ध कराएं। बैठक में राज्य प्रधान मास्टर वजीर सिंह और महासचिव रतन जिंदल के निर्देशानुसार 29 सितंबर सुबह 10 बजे से 30 सितंबर सुबह 10 बजे तक उपायुक्त कार्यालय पर 24 घंटे का धरना देने का भी निर्णय लिया गया। पूर्व जिला प्रधान पूरन चंद ने पिछले तीन वर्षों का पूरा रिकॉर्ड एवं रसीदें जिला प्रधान घनश्याम शर्मा को सौंप दी। राज्य प्रधान जगनलाल निनानिया ने सभी सदस्यों से 29-

ये रहे मौजूद

इस मौके पर छोटेलाल यादव, मुख्याध्यापक बलबीर यादव, ओमप्रकाश दासग, होशियार सिंह लांबा, हीरालाल, विजय सिंह यादव, सुरेश चंद, मामन राम, सुबेसिंह, बाबूलाल, कंवल सिंह, ताराचंद सैनी, वीरसिंह यादव, दिलीप सिंह, राजेश कुमार, अमर सिंह, ओमप्रकाश, मोहर सिंह, सावंत सिंह, राम मेहर, सुखचैन सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

18 माह के महंगाई भत्ते का एरियर अभी तक नहीं दिया गया

वक्ताओं ने कहा कि कोरोना काल के 18 माह के महंगाई भत्ते का एरियर अभी तक नहीं दिया गया है। पेंशनरों को कैशलेस चिकित्सा सुविधा का लाभ भी प्रभावी रूप से नहीं मिल रहा। इसके अलावा 65 वर्ष की आयु पर पांच प्रतिशत, 70 वर्ष पर 10 प्रतिशत, 75 वर्ष पर 15 प्रतिशत तथा 80 वर्ष पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त पेंशन, फैमिली पेंशनरों को प्लेटिनीयम सुविधा, वरिष्ठ नागरिकों को रेल व हवाई यात्रा में रियायत तथा पेंशन की कम्यूट की गई राशि की कटौती अवधि 15 वर्ष के स्थान पर 11 वर्ष करने जैसी मांगें लंबे समय से लंबित हैं।

30 सितंबर के धरने में बहु-चढ़कर भाग लेने, सदस्यता अभियान को मजबूत करने तथा संघर्ष फंड में सहयोग देने की अपील की।

मकानों को नियमित कराने के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

ग्राम पंचायत की भूमि पर 31 मार्च 2004 से पूर्व बने मकानों का होगा नियमितकरण

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी



नवीनतम खसरा गिरदावरी, अक्स-शजरा, निशानदेही रिपोर्ट एवं फील्ड बुक, मकान के सभी दिशाओं से रंगीन फोटोग्राफ, 31 मार्च 2004 से पूर्व कब्जा सिद्ध करने वाले दस्तावेज (जैसे बिजली या पानी का कनेक्शन अथवा अन्य वैध अभिलेख), वास्तुकार द्वारा तैयार साइट प्लान, मूल्य निर्धारण संबंधी दस्तावेज तथा आधार कार्ड सहित अन्य आवश्यक सहायक दस्तावेज संलग्न करना अनिवार्य है। पोर्टल पर अपलोड की जाने वाली सभी फाइलें स्पष्ट, पठनीय एवं पीडीएफ

प्रारूप में होनी चाहिए। अथूरे अथवा त्रुटिपूर्ण आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे तथा ऐसे आवेदन वापस भी किए जा सकते हैं। डीसी ने बताया कि जिन आवेदकों ने पहले नियमितकरण के लिए ऑफलाइन आवेदन जमा किए थे, उन्हें भी अपने आवेदन समाधान पोर्टल पर अनिवार्य रूप से ऑनलाइन दर्ज करने होंगे। उन्होंने बताया कि ऑनलाइन आवेदन प्राप्त होने के बाद ही प्रकरणों की जांच एवं आगामी कार्रवाई निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार त्वरित गति से की जा सकेगी। इसलिए सभी संबंधित आवेदक अपने आवेदन एवं आवश्यक दस्तावेज शीघ्र पोर्टल पर अपलोड करना सुनिश्चित करें, ताकि उनके मामलों का समयबद्ध निस्तारण किया जा सकें, ताकि धावकों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

सरपंच के नेतृत्व में खाटू श्याम धाम के लिए रवाना हुए श्रद्धालु

रेवाड़ी। गांव रामपुरा से रविवार को श्रद्धालु खाटू श्याम जी के दर्शन के लिए रवाना हुए। सरपंच नरेश यादव उर्फ ने गांव के सैकड़ों महिला, पुरुष व बच्चों को श्री खाटू श्याम के दर्शन कराने का निर्णय लिया। सरपंच के नेतृत्व में 11 बसों सहित अन्य वाहनों में श्रद्धालु खाटू श्याम धाम के लिए रवाना हुए। धार्मिक यात्रा को माजपा जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उनके साथ केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के निजी सचिव कैप्टन मोला राम भी मौजूद थे। इस मौके पर अतिथियों व ग्रामीणों ने सरपंच के धार्मिक यात्रा आयोजन व गांव में कराए गए विकास कार्यों की प्रशंसा की।



रेवाड़ी। खाटू श्याम के लिए बस रवाना करते हुए।

फोटो: हरिभूमि

स्कूली गेम्स की कबड्डी स्पर्धा में नाहड़, बावल और रेवाड़ी का दबदबा

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित का जा रही जिला स्तरीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिताओं के तहत विभिन्न खेल मैदानों पर खिलाड़ियों ने प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कबड्डी, खो-खो और वालीबॉल के अलग-अलग आयु वर्गों के मुकाबलों में खिलाड़ियों ने अपनी टीमों को जीत दिलाने के लिए पूरा जोर लगाया। कबड्डी प्रतियोगिता में अंडर-19 बॉयज वर्ग में नाहड़ ने पहला और रेवाड़ी ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि अंडर-19 गर्ल्स वर्ग में बावल प्रथम और जाटूसाना द्वितीय स्थान पर रहा। वहीं अंडर-14 बॉयज वर्ग में रेवाड़ी की टीम प्रथम व खोल की टीम द्वितीय रही, जबकि अंडर-14 गर्ल्स वर्ग में बावल ने पहला और जाटूसाना ने दूसरा स्थान हासिल किया। खो-खो में



रेवाड़ी। कबड्डी प्रतियोगिता में खेलते खिलाड़ी।

फोटो: हरिभूमि

खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। प्रतियोगिता के परिणामों में अंडर-14 गर्ल्स वर्ग में रेवाड़ी प्रथम व खोल द्वितीय स्थान पर रहा। वहीं अंडर-17 बॉयज वर्ग में बावल ने पहला और जाटूसाना ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। अंडर-19 गर्ल्स वर्ग में बावल की टीम प्रथम तथा जाटूसाना की टीम द्वितीय रही। इसके अलावा अंडर-17 गर्ल्स वर्ग में रेवाड़ी ने प्रथम और जाटूसाना का द्वितीय स्थान रहा। वॉलीबॉल अंडर-

17 में प्रथम खोल और द्वितीय रेवाड़ी रहा। एईओ भूपेन्द्र यादव और एईईओ सुनील कुमार ने बताया कि 3 अगस्त को बालक वर्ग की हैंडबॉल स्पर्धा आरपीएस रेवाड़ी तथा एथलेटिक्स प्रतियोगिता राजीव गांधी स्टेडियम कोसली में आयोजित होगी। 4 अगस्त को बालिका वर्ग की एथलेटिक्स स्पर्धा राजीव गांधी स्टेडियम मनेठी में आयोजित की जाएगी।

चेतावनी विधायक ने बिजली निगम एवं जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को दिए निर्देश

जनता की समस्या को प्राथमिकता के आधार पर निपटाएं

बिजली निगम के अफसरों को दिए पुराने एवं क्षतिग्रस्त तारों को बदलने के आदेश

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

गद्दी बोलनी रोड स्थित पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह में रविवार को विधायक एवं हरियाणा विधानसभा की शिक्षा समिति के चेयरमैन लक्ष्मण सिंह यादव ने बिजली निगम एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। विधायक ने कहा कि आम जनता की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाए तथा विकास कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग कर उन्हें समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए। बैठक में क्षेत्र की बिजली, पेयजल

विकास कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग कर उन्हें समयबद्ध तरीके से पूरा करें अधिकारी: लक्ष्मण



रेवाड़ी। अधिकारियों की बैठक लेते हुए विधायक लक्ष्मण यादव।

फोटो: हरिभूमि

एवं सीवर व्यवस्था से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा अधिकारियों को जनहित के कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। विधायक ने बिजली निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए कि घरों के ऊपर से गुजर रही जर्जर बिजली लाइनों को प्राथमिकता के आधार

पर बदला जाए, पुराने एवं क्षतिग्रस्त तारों को बदलने, ओवरलोड की समस्या का स्थायी समाधान करने, क्षतिग्रस्त बिजली के खंभों की मरम्मत कराने, निर्बाध एवं सुचारु बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा सभी पात्र बीपीएल परिवारों को बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराने

की दिशा में तेजी से कार्य किया जाए। उन्होंने कहा कि बार-बार आने वाले बिजली फॉल्ट को कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं, ताकि आम जनता को राहत मिल सकें। विधायक ने कहा कि जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के

अधिकारी पेयजल आपूर्ति नियमित बनाए रखने, सीवर संबंधी समस्याओं का त्वरित समाधान करने तथा मुख्यमंत्री की घोषणाओं से जुड़े विकास कार्यों को निर्धारित समय सीमा में पूरा करें। विधायक ने कहा कि की मूलभूत सुविधाओं से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा और सभी अधिकारी पूरी जिम्मेदारी के साथ कार्य करें। बैठक में बिजली निगम की ओर से एसई विजयपाल यादव, एसई धर्मेन्द्र, एक्सईएन सदीप, एसडीओ कृष्ण व सचिन तथा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की ओर से एसई विजय चौहान सहित पूर्व जिला मीडिया प्रभारी भाजपा बिजेंद्र डहीना, एडवोकेट अरविंद व आशीष हलू सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे।

वालीबॉल प्रतियोगिता में रेवाड़ी व खोल खंड ने मारी बाजी

रेवाड़ी। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लूला अहीर में जिला स्तरीय अंडर-19 व अंडर-17 वालीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ जिला शिक्षा अधिकारी राजेन्द्र शर्मा ने किया। खेल प्रतियोगिता में रेवाड़ी जिले के पांचों ब्लॉकों की टीमों ने भागीदारी की। जिला शिक्षा अधिकारी ने खेल प्रांगण में पौधरोपण भी किया। कार्यक्रम में प्राचार्य सुकम सिंह, प्राचार्य विनोद, प्राचार्य महेश, अनुप सिंह कारोली डीपीई महेंद्र पूनिया, कूपर सिंह, संजय, प्रवन, रविन्द्र पीटीआई, कोच विशाल व दीपक डीपीई, ओमप्रकाश, जयसिंह पीटीआई, चन्द्रशेखर व रणसिंह प्रवक्ता उमेश सिंह, यशवंत प्रवक्ता मनोज कुमार, प्रवक्ता राजबाला, सोनिया, सरिता, शोला, पूजा, दिनेश, सरपंच सुमन बाई, ब्लॉक समीति सदस्य मधुबाला व एसएससी प्रधान पिकी सहित गांव के अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

ओवरऑल चैंपियन बनने पर खुशी मनातीं आरएनएस की छात्राएं



रे रहे प्रतियोगिता के परिणाम

अंडर-19 ब्वायज व गर्ल्स वर्ग में खंड खेल प्रथम, अंडर-17 ब्वायज वर्ग में खंड खेल प्रथम व गर्ल्स वर्ग में रेवाड़ी खंड प्रथम, अंडर-19 ब्वायज व गर्ल्स वर्ग में रेवाड़ी खंड द्वितीय तथा अंडर-17 ब्वायज वर्ग में रेवाड़ी खंड द्वितीय व गर्ल्स वर्ग में नाहड़ खंड द्वितीय स्थान पर रहा।

अतिक्रमण से बिगड़ी ट्रैफिक व्यवस्था



रेवाड़ी। धारुहेड़ा के सोहना रोड पर नाले की जमीन पर रखा हुआ सामान।

फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी/धारुहेड़ा

कस्बे के सबसे व्यस्त माने जाने वाले भगत सिंह चौक, दिल्ली रोड और सोहना रोड पर लगातार बढ़ते अतिक्रमण के कारण यातायात व्यवस्था पूरी तरह प्रभावित हो रही है। पिछले कई दिनों से सुबह और शाम के समय इन मार्गों पर लंबा जाम लगना आम बात हो गई है, जिससे आम नागरिकों, वाहन चालकों और व्यापारियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क के दोनों ओर दुकानदारों और रेहड़ी-ढेला संचालकों की ओर से किए गए अतिक्रमण के कारण सड़क की चौड़ाई लगातार कम होती जा रही है। कई स्थानों पर दुकानदारों ने सरकारी नालों पर कब्जा कर दुकानें आगे बढ़ा ली है और सामान रख दिया गया है, जिससे सड़कें सिकुड़ गई हैं। वहीं सड़क किनारे वाहनों की अवैध पार्किंग से यातायात और अधिक बाधित हो रहा है।



फूड सेफ्टी व किचन हाईजीन विषय पर प्रशिक्षण आज

रेवाड़ी। खंड जाटूसाना के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत मिड-डे मील कर्मचारियों (एमडीएम कुक कम हेल्पर) के लिए खंड शिक्षा अधिकारी जाटूसाना की ओर से 3 अगस्त को फूड सेफ्टी व किचन हाईजीन विषय पर विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह प्रशिक्षण भारत सरकार की ओर से जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप आयोजित किया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता, खाद्य सुरक्षा मानकों तथा रसोई स्वच्छता को सुनिश्चित करना है। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को सुरक्षित खाद्य सामग्री का चयन एवं भंडारण, व्यक्तिगत स्वच्छता, रसोई की साफ-सफाई, भोजन तैयार करने एवं परोसने की वैज्ञानिक एवं सुरक्षित विधियाँ, खाद्य जनित रोगों से बचाव तथा स्वच्छ एवं पोस्टिक भोजन उपलब्ध कराने से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाएगी। प्रशिक्षण में खंड जाटूसाना के सभी राजकीय विद्यालयों में कार्यरत लगभग 185 कुक कम हेल्पर भाग लेंगे। प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों को भारत सरकार के निर्धारित मानकों के अनुसार मध्याह्न भोजन तैयार करने एवं विद्यालयों में खाद्य सुरक्षा एवं स्वच्छता संबंधी सर्वोत्तम प्रक्रियाओं का पालन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा।

कथन प्रदर्शनी व बुक स्टाल का उद्घाटन पार्टी के राज्य सचिव कामरेड राजेन्द्र सिंह ने किया

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

रविवार को रेजांगला पार्क में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी पार्टी एसयूसीआई के संस्थापक महामंत्री कामरेड शिवदास घोष के विचारों पर आधारित कथन प्रदर्शनी एवं उनके द्वारा रचित पुस्तकों व अन्य प्रगतिशील साहित्य की बुक स्टाल लगाई गई। कथन प्रदर्शनी व बुक स्टाल का उद्घाटन पार्टी के राज्य सचिव कामरेड राजेन्द्र सिंह ने किया। शहर के सैकड़ों प्रबुद्ध नागरिकों, छात्रों, नौजवानों एवं महिलाओं ने कथन प्रदर्शनी का अवलोकन किया। एसयूसीआई पार्टी के जिला सचिव शेर सिंह मीरपुर में बताया कि पार्टी के संस्थापक महामंत्री स्वतंत्रता सेनानी कामरेड शिवदास घोष की 50वीं पुण्यतिथि पर उनके विचारों का प्रचार प्रसार करने के उद्देश्य से यह कथन प्रदर्शनी लगाई गई। कामरेड शिवदास घोष ने 24 अप्रैल 1948 को पूंजीवाद

कोसली में आज से चलेगा अतिक्रमण हटाओ अभियान, सामान होगा जब्त, काटे जाएंगे चालान



कोसली। कोसली के बाजार को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए प्रशासन की ओर से 3 अगस्त से सक्रिय अभियान चलाया जाएगा। एसडीएम विजय कुमार यादव ने कहा कि क्षेत्र के मुख्य बाजार और मुख्य सड़कों पर नाजायज कब्जे होने की बार-बार शिकायतें सामने आ रही हैं, जिसके कारण आम नागरिकों तथा वाहन चालकों को आवागमन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। शहर का मौलिक स्वरूप अवैध कब्जों के कारण बिगड़ता जा रहा है। उन्होंने बताया कि सोमवार से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी। बीडीपीओ अनिल कुमार को इस अभियान का इयूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। एसडीएम ने कहा कि दुकानदार सड़कों पर रखे सामान को खुद हटा लें, अन्यथा इसे जब्त कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि बाजार में दुकानों के सामने मिर्ची वाहन व रेहड़ी खड़ी दिखाई दी तो उनके चालान काटे जाएंगे। दुकानों का सामान उनकी हद में ही रहे। दुकान के बाहर सड़क पर कोई साइनबोर्ड, तख्त, बैच, बोर्डियां व कट्टे नहीं रखे हुए होने चाहिए। अतिक्रमण हटाओ अभियान में किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जाएगा।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलाने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, रेवेटर-1 वाला बच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, वावरा रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 005-80576211, 8295738500, 8291554800

सरकारी जमीन पर दुकानदारों का कब्जा

भगत सिंह चौक, दिल्ली व सोहना रोड पर रोजाना लग रहा जाम

कामकाज पर पड़ रहा प्रतिकूल प्रभाव

भगत सिंह चौक धारुहेड़ा का प्रमुख यातायात केंद्र है, जहां से प्रतिदिन हजारों वाहन गुजरते हैं, लेकिन अतिक्रमण के चलते यहां घंटों तक जाम की स्थिति बनी रहती है, जिससे राहगीरों, स्कूली बच्चों, कर्मचारियों और व्यापारियों को समय पर अपने गंतव्य तक पहुंचने में कठिनाई होती है। लोगों का कहना है कि रोजाना जाम में फंसने से उनके कामकाज और व्यापार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। क्षेत्रवासियों का कहना है कि नगर पालिका को इस समस्या की जानकारी होने के बावजूद प्रभावी कार्रवाई नहीं की जा रही है।



रेवाड़ी। धारुहेड़ा के दिल्ली रोड पर किया गया अतिक्रमण।



रेवाड़ी। दिल्ली रोड पर बीच सड़क में खड़ी रेहड़ी।

फोटो : हरिभूमि

सरकारी भूमि को कब्जामुक्त कराने की मांग

स्थानीय नागरिकों ने आरोप लगाया कि नेशनल हाईवे-919 स्थित सोहना रोड पर कई दुकानदार सरकारी नालों के ऊपर अपना सामान रखकर कारोबार कर रहे हैं। वहीं दिल्ली रोड पर भी नालों के ऊपर खोखे और अस्थायी ढांचे खड़े कर सरकारी भूमि पर कब्जा किया गया है। लोगों का यह भी आरोप है कि कुछ लोग इन स्थानों पर खोखे लगवाकर सरकारी भूमि का अवैध रूप से किराया तक वसूल रहे हैं। उनका आरोप है कि अतिक्रमण हटाने के लिए समय-समय पर अभियान चलाने की बात तो होती है, लेकिन स्थायी समाधान नहीं निकल पा रहा है। यदि समय रहते कार्रवाई नहीं की गई तो आने वाले दिनों में यातायात व्यवस्था और अधिक बिगड़ सकती है। स्थानीय नागरिकों ने जिला प्रशासन और नगर पालिका से भगत सिंह चौक, दिल्ली रोड और सोहना रोड पर विशेष अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाकर सरकारी भूमि को कब्जामुक्त कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि नालों की जमीन को खाली कराया जाए तथा सड़क किनारे होने वाली अवैध पार्किंग पर भी सख्ती से रोक लगाई जाए, ताकि लोगों को जाम की समस्या से राहत मिल सके।

सीसीटीवी कैमरे अवश्य लगवाएं: एसएचओ

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

एसएचओ ने क्षेत्र के मौजिज लोगों के साथ की बैठक

क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के उद्देश्य से रविवार को जाटूसाना थाना परिसर में एसएचओ विद्यासागर की अध्यक्षता में क्षेत्र के मौजिज एवं गणमान्य नागरिकों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। इस मौके परदक्षेत्र को अपराध मुक्त बनाने, सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर करने तथा पुलिस-पब्लिक समन्वय को मजबूत करने सहित कई मुद्दों पर चर्चा की गई। इस मौके पर एसएचओ ने कहा कि आधुनिक पुलिसिंग और अपराध निर्यन्त्रण में सीसीटीवी कैमरे सबसे बड़े मददगार साबित हो रहे हैं। उन्होंने नागरिकों



रेवाड़ी। पुलिस थाने में नागरिकों की बैठक लेते एसएचओ विद्यासागर।

फोटो : हरिभूमि

से अपील करते हुए कहा कि वे अपने-अपने घरों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, दुकानों और गांवों के मुख्य चौराहों व प्रवेश द्वारों पर उच्च क्षमता वाले सीसीटीवी कैमरे अवश्य लगवाएं। इससे न केवल चोरी जैसी घटनाओं पर अंकुश लगाया, बल्कि अपराधियों में भी भय पैदा होगा।

संदिग्धों पर रखें पैनी नजर
थाना प्रबंधक ने कहा कि सभी

नागरिक अपने क्षेत्रों में शराती तत्वों, नशे का कारोबार या सेवन करने वाले युवाओं और किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर पैनी नजर रखें। किसी भी संदिग्ध स्थिति में तुरंत डायल-112 पर पुलिस को सूचित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान पूरी तरह से गुप्त रखी जाएगी और पुलिस त्वरित व सख्त कानूनी कार्रवाई करेगी।

एसयूसीआई के संस्थापक की स्मृति में रेजांगला पार्क में लगाई प्रदर्शनी



विरोधी समाजवादी क्रांति के उद्देश्य पर भारत की क्रांतिकारी पार्टी एसयूसीआई की स्थापना की थी। तभी से पार्टी आम लोगों की समस्याओं, महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार के खिलाफ, शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार को लेकर जन आंदोलन करत आ रही है। जिला सचिव ने बताया कि कामरेड शिवदास घोष की 50वीं बरसी पर 8 अगस्त को झंझर में एक राज्य स्तरीय स्मृति सभा का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर पार्टी की जिला कमिटी के वरिष्ठ सदस्य रामकुमार निमोट, करतार सिंह, अजय एडवोकेट, अनिल कुमार व हरिओम सिंह अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

रिटायर्ड रेलवे कर्मचारियों व परिवारिक पेंशनर्स को ऑफलाइन मिलेंगे पास

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

रेलवे बोर्ड ने सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारियों व परिवारिक पेंशनर्स को ऑफ लाइन कॉमिंलमेंटरी पास-विधवा पास की सुविधा को छह महीने के लिए ऑफलाइन मोड में जारी रख दिया है, जिसके लिए रेलवे एसोसिएशन ने रेल मंत्री व चेयरमैन रेलवे बोर्ड का आभार जताया है। नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन रेलवेमैन की सेवानिवृत्त एसोसिएशन ऑफ रेलवे जिला शाखा काफी दिनों से रेल मंत्री तथा चेयरमैन से ज्ञापन एवं पत्रों के माध्यम से रेलवे बोर्ड की ओर से सेवानिवृत्त कर्मचारियों व परिवारिक पेंशनर्स को मिलने वाले पोस्ट रिटायरमेंट कॉमिंलमेंटरी पास-विधवा पास को ऑनलाइन से ऑफलाइन करने की मांग कर रही थी। ऑनलाइन पास से रिटायर्ड कर्मचारियों व परिवारिक पेंशनर्स को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा था, क्योंकि करीब 50

प्रतिशत कर्मचारी व पेंशनर्स एंड्राइड फोन को यूज करना नहीं जानते हैं। यह पास एचआरएमएस के माध्यम से जारी होगा तथा आईआरसीटीसी के माध्यम से ट्रेन में जाने के लिए रिजर्वेशन होगा। एसोसिएशन के जोनल अध्यक्ष केके सक्सेना ने कहा कि आज भी सेवानिवृत्त कर्मचारी गांवों में रहते हैं, जहां पूरी तरह से नेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है, जिसके कारण पास जारी व रिजर्वेशन नहीं हो सकेगा। यदि प्राइवेट एजेंसी से यह कार्य कराया जाता है तो ओटीपी का एक्सचेंज भी होगा, जोकि धोखाधड़ी का कारण बन सकता है। ऑफलाइन सेवा मिलने पर एसोसिएशन सदस्यों ने डा. एम राधवैया महामंत्री नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन रेलवेमैन व शिव गोपाल मिश्रा महामंत्री ऑल इंडिया रेलवे मेनर्स फेडरेशन तथा एसएनसी रामकृष्णमाचार्युलू महामंत्री पेंशनर्स एसोसिएशन ऑफ रेलवे महामंत्री का भी आभार जताया है।

जागरूक

युवाओं को नशे से दूर रहने जिम्मेदार व नशामुक्त भारत के निर्माण के लिए किया प्रेरित

100 सप्ताह के संडे एंगेजमेंट प्रोग्राम की शुरुआत की गई

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत मेरा युवा भारत की ओर से संचालित नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत संकल्प अभियान के शुभारंभ पर रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर के करोड़ों युवाओं को वर्चुअल माध्यम से नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के साथ स्वस्थ, जिम्मेदार एवं नशामुक्त भारत के निर्माण के लिए प्रेरित किया। इसी के साथ 100 सप्ताह के संडे एंगेजमेंट प्रोग्राम की शुरुआत की गई, जिसके अंतर्गत प्रत्येक रविवार खेल, संस्कृति, फिटनेस एवं जनजागरूकता से संबंधित गतिविधियों का आयोजन



रेवाड़ी। कार्यक्रम में डीसी का स्मृति चिह्न भेंट करते आयोजक।

फोटो : हरिभूमि

किया जाएगा। जिला में वर्चुअल कार्यक्रम का आयोजन बाल भवन में किया गया। कार्यक्रम में डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि युवा ही 2047 में देश को विकसित भारत की मंजिल तक लेकर जाएंगे। युवाओं की ऊर्जा, कल्पनाशक्ति और टैलेंट इसके लिए अति महत्वपूर्ण है। देश और अपने जीवन के लिए खुद को नशा मुक्त रखना बहुत जरूरी है।

नशामुक्ति का संकल्प दिलाया। इस मौके पर डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि युवा ही 2047 में देश को विकसित भारत की मंजिल तक लेकर जाएंगे। युवाओं की ऊर्जा, कल्पनाशक्ति और टैलेंट इसके लिए अति महत्वपूर्ण है। देश और अपने जीवन के लिए खुद को नशा मुक्त रखना बहुत जरूरी है।

हर एक युवा को बचाना है

डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि जब कोई युवा ड्रग्स के एडिक्शन में फंस जाए, तो केवल एक युवा नहीं हरता, एक सपना हर जाता है, एक सपने की बाल मृत्यु हो जाती है, एक परिवार हर जाता है, पूरा का पूरा परिवार टूट जाता है, समाज से भी नफरत का शिकार बन जाता है। नशा केवल शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाता, नशा एक मां की मुस्कान डीन लेता है। नशा एक पिता के सपनों को चूर-चूर कर देता है। जब परिवार में, समाज में ऐसा होता है और कहीं न कहीं, राष्ट्र की शक्ति भी कमजोर पड़ जाती है। ड्रग्स स्पलाई करके कमाई करना और हमारे जैसे देश को तबाह करना, यह भी उनकी आतंकी साजिश का हिस्सा होता है और इसलिए हमें हर एक युवा को नशे के चंगुल में फंसने से बचाना है।

आज के युवा स्टार्टअप की दुनिया में छाए हैं। एआई को लीड कर रहे हैं, खेलों में तिरंगा लहरा रहे हैं। स्पेस से लेकर विज्ञान तक नए कीर्तिमान बना रहे हैं। डीसी ने कहा कि समाज में भी हमेशा नशे को एक बुराई के रूप में देखा है। हमारी संस्कृति में बचाव के लिए चेतावनी भी दी गई है और नशे की आदत लगने पर उससे

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर जिला बाल कल्याण अधिकारी वीरेंद्र यादव, जिला खेल अधिकारी मनोज कुमार, कोच चरण सिंह, मेरा भारत से लेख एवं कार्यक्रम सहायक जितेंद्र सैनी, विनय कुमार और योगेश सहित काफी संख्या में विद्यार्थी मौजूद थे।

कोई बच्चा अगर नशे का शिकार बन गया है, तो इसे सामाजिक प्रतिष्ठा की आड़ में छिपाएं नहीं। मेडिकल हेल्प से अपने बच्चे को नशे से मुक्त कराने का प्रयास करें। हमें परिवार में बच्चों से खुलकर संवाद की संस्कृति भी बनानी चाहिए, ताकि ऐसे भंवर में फंसने से पहले ही आप उसका हाथ थाम सकें।

न्यूज़ डायरी



500 पौधे रोपित व वितरित किए

रेवाड़ी। राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पैंथरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य विनोद यादव के नेतृत्व में स्टाफ सदस्यों एवं छात्रों ने मिलकर विद्यालय प्रांगण एवं खेल मैदान में 500 पौधे लगाए। साथ ही छात्रों एवं उनके अभिभावकों को पौधे भी वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन शिक्षाविद मनोज वशिष्ठ ने किया। इस अवसर पर प्राचार्य विनोद यादव ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण हम सबकी सांकेतिक जिम्मेदारी है। वृक्ष हमारे जीवन के आधार हैं। एक पेड़ मां के नाम अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना विकसित की जा रही है। कार्यक्रम संयोजक मनोज वशिष्ठ ने कहा कि पैंथरोपण केवल पर्यावरण का विषय नहीं, यह हमारी सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है। कार्यक्रम में जितेंद्र दूधोरा, विकास, अशोक बैरवाल, बबिता राजपाल, सुनीता देवी, नीलम, सुनीता कुमारी, बबिता, राजेश कुमारी, सरोज कुमारी, रंजू बाला, राजेश यादव, सरोज बाला व रीना यादव ने सहयोग दिया।

बाबू बालमुकुंद गुप्त स्मृति समारोह झंझर में

रेवाड़ी। जिले के गांव गुडियानी में जन्मे साहित्यकार एवं मूर्धन्य पत्रकार बाबू बालमुकुंद गुप्त की 119वीं पुण्यतिथि पर आगामी 18 सितंबर को राज्य स्तरीय स्मृति समारोह झंझर में आयोजित किया जाएगा। रेवाड़ी में हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत बाबू बालमुकुंद गुप्त पर केंद्रित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। परिषद के अध्यक्ष ऋषि सिंहल ने बताया कि झंझर समारोह के संयोजक परिषद के महासचिव तथा वरिष्ठ पत्रकार डा. प्रवीण खुराना होंगे। हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी पंचकूला की ओर से प्रस्तावित समारोह में बाबू बालमुकुंद गुप्त पुरस्कार, पुस्तक लोकार्पण तथा विचार गोष्ठी मुख्य आकर्षण रहेंगे। परिषद के मुख्य संरक्षक एवं वरिष्ठ साहित्यकार डा. चंद्र त्रिखा, बाबू बालमुकुंद गुप्त के प्रपौत्र बिमल गुप्त कोलकाला तथा परिषद के उपध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार रोहित यादव मंडी अटली के मार्गदर्शन में समारोह के प्रारूप को शीघ्र अंतिम रूप दिया जाएगा, जिसमें झंझर के मुख्य समारोह के अलावा इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय की बाबू बालमुकुंद गुप्त पीठ, जिले के विभिन्न महाविद्यालयों, विद्यालयों तथा साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं को संयुक्त तत्वावधान में होने वाले विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का प्रारूप भी शामिल है। रेवाड़ी जिले के इन सभी कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं के संयोजक परिषद के महासचिव एवं साहित्यकार सख्तवीर नाहड़िया होंगे। उन्होंने बताया कि शीघ्र हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का कैलेंडर भी घोषित किया जाएगा।



कैंप में 130 मरीजों ने करवाई स्वास्थ्य जांच

रेवाड़ी। यादव कल्याण सभा की ओर से रविवार को गढ़ी बोलनी रोड स्थित श्री कृष्ण भवन में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। कैंप में 130 मरीजों को ओपीडी सेवाएं व प्रदीप्त दवाइयां प्रदान की गईं। डा. तरुण यादव ने मेडिसन, डा. अनिल यादव ने हड्डी रोग, डा. गौरव यादव ने सर्जरी, डा. गौतम यादव ने नेत्र रोग, डा. योगेन्द्र यादव ने चर्म रोग व डा. अजीत यादव ने बाल रोग के मरीजों की स्वास्थ्य जांच कर उचित परामर्श दिया। कैंप के संचालन में सभा के प्रधान रामबीर यादव, जसवंत सिंह, शशिभूषण, अमर सिंह, गोकरल राम, विजय पाल, आनंद, राजेश व पवन ने सहयोग दिया। सभा के प्रवक्ता प्रो. सीतीश यादव ने बताया कि आगामी 9 अगस्त को यादव कल्याण सभा की ओर से डॉक्टर्स के सप्ताह में चतुर्थ वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जाएगा, जिसमें कैंप में निःस्वास्थ्य सेवा प्रदान करने वाले सभी डॉक्टर्स को सम्मानित किया जाएगा।



महिला श्रमिकों को स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

रेवाड़ी। एएम टीम फाउंडेशन की ओर से मिशन लाल रंग अभियान के अंतर्गत रविवार को ढालियावास चौक पर महिला श्रमिकों के लिए सेनेटरी पैड वितरण एवं मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभियान का नेतृत्व ज्योति गुप्ता ने किया। अभियान के दौरान करीब 70 महिला श्रमिकों को निःशुल्क सेनेटरी पैड वितरित किए गए। साथ ही उन्हें मासिक धर्म स्वच्छता, सुरक्षित प्रबंधन तथा इससे जुड़े निष्कर्षों और भावियों के बारे में जागरूक किया गया। कार्यक्रम में अनुराधा सैनी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। टीम के सदस्य राहुल, आलोक एवं हर्द्वर ने भी कार्यक्रम में सहयोग दिया। इस अवसर पर ज्योति गुप्ता ने कहा कि मिशन लाल रंग का उद्देश्य केवल सेनेटरी पैड उपलब्ध करवाना नहीं, बल्कि मासिक धर्म के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाना और इस विषय पर फैली हिंसा को समाप्त करना है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के साथ-साथ पुरुषों की संवेदकशील भागीदारी भी समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए आवश्यक है।